काले मेघा पानी दे

उन लोगों के दो नाम थे – इंदर सेना या फिर मेढक-मंडली। बिलकुल एक-दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछल-कूद, उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होनेवाले कीचड़ काँदो से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढक-मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस-बारह बरस से सोलह-अठारह बरस के लड़के, साँवला नंगा बदन सिर्फ़ एक जाँघिया या कभी-कभी सिर्फ़ लँगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, "बोल गंगा मैया की जय।" जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे, बारजे से झाँकने लगती थीं और यह विचित्र नंग-धड़ंग टोली उछलती-कूदती समवेत पुकार लगाती थी:

काले मेघा पानी दे
गगरी फूटी बैल पियासा
पानी दे, गुड़धानी दे
काले मेघा पानी दे।

उछलते-कूदते, एक-दूसरे को धकियाते ये लोग गली में किसी दुमहले मकान के सामने रुक जाते, "पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।" और जिन घरों में आखीर जेठ या शुरू आषाढ़ के उन सूखे दिनों में पानी की कमी भी होती थी, जिन घरों के कुएँ भी सूखे होते थे, उन घरों से भी सहेज कर रखे हुए पानी में से बाल्टी या घड़े भर-भर कर इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन धूल में लोट लगाते और पानी फेंकने से बने हुए कीचड़ में लथपथ हो जाते। हाथ, पाँव, बदन, मुँह, पेट सब पर गंदा कीचड़ मल कर फिर हाँक लगाते "बोल गंगा मैया की जय" और फिर मंडली बाँध कर उछलते-कूदते अगले घर की ओर चल पड़ते बादलों को टेरते, "काले मेघा पानी दे।" वे सचमुच ऐसे ही दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीत कर आषाढ़ का पहला पखवारा भी बीत चुका होता पर क्षितिज पर कहीं बादल की रेख भी नहीं दीखती थी, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को भी मानो खौलता हुआ पानी हो। शहरों की अपेक्षा गाँव में और भी हालत खराब होती थी। जहाँ जुताई होनी चाहिए वहाँ खेतों की मिट्टी सूख कर पत्थर हो जाती, फिर उसमें पपड़ी पड़ कर ज़मीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी आधे रास्ते में ही लू खा कर गिर पड़े। ढोर-ढंगर प्यास के मारे मरने लगते लेकिन बारिश का कहीं नाम-निशान नहीं था, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते, तब आखिरी उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना। वर्षा के बादलों के स्वामी हैं इंदर और इंदर की यह पूरी सेना टोली बाँध कर कीचड़ में लथपथ निकलती, मेघों को पुकारते हुए, पानी माँगते हुए, प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए। पानी की आशा पर जैसे सारा जीवन आकर टिक गया हो। बस एक बात मेरे समझ में नहीं आती थी कि जब चारों ओर पानी की इतनी कमी है तो लोग घर में इतनी मुश्किल से इकट्ठा करके

आदमी का अपमान है, जिसमें सबका अपमान करता है। जब राजा तथा प्रजा सिर्फ यही मान नहीं है। साथ ही यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी कहते हैं।" जोशी का एक बेटा राष्ट्रीय आंदोलन में पुलिस की लाठी खा चुका था, तब से जोशी अक्सर गांधी जी की बात करने लगी थी।

इन बातों को आज शताब्दी से अधिक समय हो गए लेकिन उन की बातें मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी बैठे-बैठे मन में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, आज हम देश के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में कहीं-कहीं नीति है [illegible] का कहीं नामो निशान नहीं है। अपना स्वार्थ ही आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम [illegible] लेकर [illegible] भी उसके भ्रष्टाचार की बात करते हैं लेकिन क्या कभी हमने यह सोचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम इसी भ्रष्टाचार का हिस्सा तो नहीं बन रहे हैं? काले धन के [illegible] के [illegible] हैं, यानी [illegible] जनता है, किंतु [illegible] पूड़ी की पूड़ी रह जाती है और बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? समझ नहीं आता आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?